मार्गबन्धु स्तोत्रम्

शंभो महादेव देव शिव शंभो महादेव देवीश शंभो -
शंभो महादेव देव ॥

फालावन म्रत्किरीटं फाल नेत्रा र्चिषा दग्ध पञ्चेषु कीटम् ।
शूलाहता रातिकूटं, शुद्ध मर्धेन्दु चूडं भजे मार्गबन्धुम् ॥

अङ्गे विराज द्भुजङ्गं अभ्र गङ्गातरङ्गाभि रामोत्तमाङ्गं ।
ओंकार वाटी कुरङ्गं सिद्ध संसेवि ताङ्घ्रिं भजे मार्गबन्धुम् ॥

नित्यम् चिदानन्द रूपं निह्नुताशेष लोकेश वैरि प्रतापं ।
कार्तस्व रागेन्द्र चापं कृत्तिवासं भजे दिव्य सन्मार्गबन्धुम् ॥

कन्दर्प दर्पघ्न मीशं कालकण्ठं महेशं महाव्योम केशं ।
कुन्दाभदन्तं सुरेशं कोटिसूर्य प्रकाशं भजे मार्गबन्धुम् ॥

मन्दारभूते रुदारं मन्दरागेन्द्र सारं महागौर्य दूरं ।
सिन्दूरदूर प्रचारं सिन्धु राजाति धीरं भजे मार्गबन्धुम् ॥

अप्पय्य यज्ज्वेन्द्र गीतं स्तोत्र राजं पठेद्यस्तु भक्त्या प्रयाणे ।
तस्यार्थ सिद्धिं विधत्ते मार्ग मध्येऽभयं चाशु तोषा महेशः ॥

शंभो महादेव देव शिव शंभो महादेव देवीश शंभो -
शंभो महादेव देव ॥